अध्याय : दस

अमृता प्रीतम

साहित्य अकादमी के फेलो, ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित, राज्यसभा के सदस्य रह चुकल पंजाबी के नामी लेखिका अमृता प्रीतम के जनम 1919 ई में पाकिस्तान के गुजरांवाला में भइल रहे । ऊ लगभग 70 किताब लिखले बाड़ी जेकर लोकप्रियता भोजपुरी पाठकनो के बीच्र रहल बा । अपना मसहूर नज्म 'अज अक्खा वारिस शाह नू कि तो कबरा बिचो बोल, कि अज किताबो वरका खोल' से ऊ बुलंदी के चोटी पर पहुँचली।

उनकर आत्मकथा 'रसीदी टिकट' आ हिन्दुस्तान-पाकिस्तान बँटवारा का दौरान भइल विस्थापन, फेर धर्म-परिवर्तन पर आधारित उपन्यास 'पिंजर' खास चर्चा खातिर उल्लेखनीय बा। 'पिंजर' पर सफल कला फिल्म के निर्माण हो चुकल बा ।

एह तरह से अमृता प्रीतम जइसन आ एतना सम्मान पावेवाली पहिल भारतीय महिला मानल जाली जेकरा एतना प्रसिद्ध मिलल ।

अइसन कवयित्री 31 अक्टूबर 2005 के एह दुनिया से बिदा हो गइली ।

विषय-प्रवेश

एह कविता में कवयित्री 'हीर-राँझा' जइसन अमर प्रेम के लोकगाथा के लोक गीतकार वारिसशाह से बिनवत बाड़ी कि अ अपना कबर से बहरी आवस, आपन पूर्व प्रेमाख्यान पर ध्यान देस आ फेर से प्रेम पैदा करे वाली कवनो किताब के नया पन्ना लिखस । काहें कि पंजाब के धरती अपना बेटियन के त्रासदी लेके आज पहिलहु से बदतर हालत में बा।

वारिसशाह से

ए वारिसशाह बोल कबर से
आपन कहल टटोल !
प्रेम के पोथी के फेर कवनो
नवका पन्ना खोल !

इक पंजाब के बेटी ला तू
लिखलऽ लमहर गाथा
रोअति बा लाखन बेटी अब
कुछ त अमरित घोल !

देखऽना चउपाल के हालत
लाशन से पाटल बा
अउर चिनाब नदी में—
पानी ना, लोहू आँटल बा
कवन बना देले बा
पाँचो नदियन के जहरीला ?
अउर एही पानी से बा
ऊ धरती सींचेवाला
उपजाऊ जमीन में सगरे
माहुर अँखुआइल बा
फेर महुराइल हवा
पेड़-पौधन पर बहे लागल बा

ऊहे बाँसो के बंसुरी के
नागिन बना रहल बा
डास रहल बा नाग ओठ में
देहिया पोलम पोल !......

एने गीत रूकल ओने
चरखा के तार टुटल बा
सखियन के महफिल में
वीरानी के भाव जुटल बा
माँझी नाव चला रेतल
पीपर से झुलुआ खूलल
गूंजत गीत पराइल कतहूँ
हीर से राँझा रूठल
बरखो में खूने बरखत
कबरो से खूने रीसत

प्रेमनगर के राजकुमारी
हर मजार से सिसकत
हुस्न प पाबंदी लागल बा
इश्क भइल संगसार
अइसन में ना पैदा होलन
वारिसशाह दू चार
तोहरे से विनती बा 'वारिस'
वचन तोहर अनमोल ।
प्रेम के पोथी के फेर कवनो
नयका पन्ना खोल !......

(साभार : 'पाती' अंक-50, मार्च-जून 2007)

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'वारिसशाह से' कविता कवना कवयित्री के मूल कविता के अनुवाद बा ?

(क) मीरा बाई (ख) महादेव वर्मा

(ग) अमृता प्रीतम (घ) सरोजिनी नायडू

2. मूल कविता के भाषा का बा ?

(क) हिंदी (ख) पंजाबी

(ग) बंगाली (घ) उर्दू

3. कविता में केकरा से प्रेम के पोथी फेर से लिखे के कहल गइल बा ?

(क) भिखारी ठाकुर से (ख) वारिसशाह से

(ग) अमीर खुसरो से (घ) कबीर दास से

4. कविता में पंजाब के कवन नदी के नाम आइल बा ?

(क) झेलम (ख) रावी

(ग) चिनाब (घ) सिन्धु

5. कविता में कवन प्रसिद्ध प्रेमगाथा के नाम आइल बा ?

(क) लैला मजनू (ख) शिरी-फरहाद

(ग) हीर-राँझा (घ) सोहनी-महिवाल

6. 'वारिसशाह से' कविता जवना पंजाबी कविता के अनुवाद बा, ओकर मूल पंक्ति लिखीं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पंजाब कव गो नदी खातिर मशहूर बा ?

2. वारिसशाह के रहे ?

3. कवयित्री फेर से प्रेम के पोथी काहे लिखे के माँग करताड़ी ?

4. बेटियन लेके आज के पंजाब के हालत पाँच पंक्तियन में लिखीं ।

5. वारिसशाह के अनमोल वचन का रहे ? पाँच पंक्तियन में लिखीं ।

6. दीहल गइल शब्द भंडार में से पाँच गो संज्ञा शब्द चुन के ओकर विशेषण बनाईं ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अमृता प्रीतम के परिचय लिखीं ।

2. कविता के भाव संक्षेप में लिखीं ।

परियोजना कार्य

1. हिंदी के कवनो छोट कविता के भोजपुरी में अनुवाद करीं ।

2. एह कविता का अलावे जो कवनो दोसरा भाषा के कविता के भोजपुरी में अनुवाद भइल होखे त ओके खोज के पढ़ीं ।

3. अनुवाद-कला का बारे में जानीं ।

शब्द-भंडार

टटोलल – खोजल, हाथ से छू के कवनो चीज के खोजल

पोथी – किताब

नवका – नया

गाथा – लमहर कहानी वाली गेय कविता

सींचल – पटावल

माहुर – जहर

आँखुआइल – टेम्ही निकलल, अंकुरित भइल

महुराइल – जहर लगावल

पोलम पोल – खोखला

महफिल	–	नृत्य-बइठका (सभा)
माँझी	–	नाव खेवेवाला
मजार	–	संत भा महान व्यक्ति के कब्र
सिसकल	–	धीरे-धीरे आ मने मन रोअल,
इश्क	–	प्रेम
अनमोल	–	जवना चीज के दाम ना लगावल जा सके, बेशकीमती

SDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

अध्याय : ग्यारह

रमाकांत द्विवेदी 'रमता'

रमाकांत द्विवेदी 'रमता' के जन्म 30 अक्टूबर, 1917 के भोजपुरी के महुलघाट (बड़हारा) में भइल रहे । उहाँ का बचपने से जुझारू आ स्वाभिमानी रहीं । शुरुआती शिक्षा-दीक्षा बालानंद संस्कृत विद्यालय परशुरामपुर से, मध्यमा के बाद देवघर विद्यापीठ से साहित्य भूषण के उपाधि प्राप्त कइले रहीं । जवानी का उमिर में भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में साथे रहस । 1972 में नमक सत्याग्रह में धरा के जेल गइलन । फेरू 1941 आ 1943 में भी जेल में सजा कटले ।

आजादी का बादो देश पर सामंत, पूँजीपतियन आ नौकरशाहन के दबदबा से इहाँ का हृदय में विद्रोह के आगि धधक उठल । जे 'बेयालिस के साथी' 'क्रांतिपथ' विद्रोही आदि रचना में देखे के मिले ला। 'नक्सलबाड़ी की जय' 'बिगुल बजा नक्सलवाड़ी', 'पेरलजाई परजा', 'रउवा नेता भइलीं', 'दिल्ली वाली रनिया', 'कलक रनिया', बेगारी तोरी करब नाहीं रे कुचाली, कलउ के भूत, सुराज के सराध, अकाल आदि इनकर प्रसिद्ध कविता बा । इहाँ का भोजपुरी के एगो सिद्ध कवि रहीं । इहाँ के साहित्य के बदलाव के हथियार मानत रहीं । एही से उहाँ के जन संस्कृति मंच से जुड़ के एह दिशा में सजग होके काम कइलीं । 24 जनवरी, 2008 के इहाँ के मउवत हो गइल।

विषय-प्रवेश

'बेयालीस के साथी' शीर्षक कविता में आजादी के बाद सुराज के कल्पना के अनुरूप बदलाव ना अइला पर कवि क्रांति के दिनन के इयाद करत कह रहल बाड़न कि जवना आजादी खातिर क्रांतिकारी लोग आपन सुविधा छोड़ के दर-दर के ठोकर खइलन, डाँड़ में रसा लगा के जेल गइलन, रात-बिरात भागल चललन, जुल्मी अंग्रेजन के लाठी खइलन, ऊ सुराज ना आइल । क्रांतिकारी लोग ई सब यातना एहसे सहलन कि अंग्रेजी सल्तनत के जुल्म के चक्की में पिसाए वाला गरीब गुरबा सम्मान के जीवन बिलइहन। बाकिर आजादी के लड़ाई के सहभागिए लोग सत्ता पवला के बाद अहंकारी आ विलासी होके गरीब जनता के भुला गइलन ।

कवि के दृष्टि में ई स्थिति निराशाजनक बा आ एह सत्ता के मद में आंहर भइले लोगन के अंतो नजदीके लउकता । एही भाव के मार्मिक रूप में अभिव्यक्त कहल गइल बा ।

बेयालिस के साथी

साथी, ऊ दिन परल इयाद, नयन भरि आइल, ए साथी !

गरजे-तड़के चमके-बरसे, घटा भयावन कारी
आपन हाथ आपु ना सूझे, अइसन रात अन्हारी
चारो ओर भइल पजंजल ऊ, भादो-भदबारी
डेगे-डेग गोड़ बिछिलाइल, फनलीं कठिन कियारी
केहि आशा वन-वन फिरलीं छिछिआइल, ए साथी !

हाथे कड़ी, पाँव में बेड़ी, डाँड़े रसी बन्हाइल
बिना कसूर मूंज के अइसन, लाठिन देह थुराइल
सूपो चालन कुरुक करा के जुरुमाना वसुलाइल
बड़ा धरछने आइल, बाकी ऊ सुराज ना आइल
जवना खातिर तेरहो करम पुराइल, ए साथी !

भूखे-पेट बिसूरे लइका, समुझे ना समुझावे
गाँधि लुगरिया रनिया झुरवे, लाजो देखि लजावे
बिनु किवाँड़ घर कूकुर पइसे, ले छुँछहँड़ ढिमिलावे
रात-रात भर सोच-फिकिर में आँखी नींन न आवे
ई दुख सहल न जाइ कि मन उबिआइल, ए साथी !
कूर-सँघाती राज हड़पले, भरि मुंह ना बतिआवसु

हमरे बल से कुरसी तूरसु, हमके आँखि देखावसु
दिन-दिन एने बढ़े मुसीबत, ओने मउज उड़ावसु
पाथर बोझल नाव भवँर में, डूबे पार लगावसु
सजगे इन्हिको अंत काल नगिचाइल, एक साथी !

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **'बेयालिस के साथी' कविता के मूल भाव का बा ?**

   (क) प्रकृति वर्णन   (ख) सामाजिकता

   (ग) राष्ट्रीयता   (घ) एह में कवनो ना

2. **'बेयालिस के साथी' कविता में कवना मौसम के वर्णन बा ?**

   (क) जाड़ा   (ख) बरसात

   (ग) गर्मी   (घ) बसंत

3. **'बेयालिस के साथी' बिना कसूर कवना चीज अइसन लोग पिटाइल ?**

   (क) गदहा   (ख) भूसा

   (ग) मकई   (घ) मूंज

4. **रात-रात भर नीन काहे ना आवे ?**

   (क) हल्ला-गुल्ला से   (ख) सोच-फिकिर से

   (ग) गर्मी से   (घ) डर से

लघु उत्तरीय प्रश्न

5. कवना आशा मे वन-वन छिछिआइल फिरत बा ?
6. आपन हाथ अपने काहे ना सूझे ?
7. जवना खातिर तेरहो करम पूरल ऊ का ह, जे ना आइल ?
8. कइसन आदमी राज हड़पले बा ?
9. जेकरा बल से कुरसी बइठल बा, ओकरा से का नइखे करत ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कवन-कवन दुख सहला का बादो सुराज ना आइल ?

2. 'पाथर बोझल नाव भवँर में' केकरा खातिर आइल बा ? एह पंक्ति का माध्यम से देश के वर्तमान स्थिति के दुर्दशा के चित्रण भइल बा– कइसे ?

भाषा के संगे

नीचे लिखल मुहावरन के अर्थ दिहल बा। एकर वाक्य प्रयोग करीं।

1. नयन भरल–दुःखी भइल
2. तेरहो करम पुराइल–सब गत भइल
3. कुरसी हरपले–राज कइल
4. आँखि देखावसु–डेरवावल

परियोजना कार्य

1. 'बेयालिस के क्रांति' से संबंधित कवनो आउरी कविता खोज के पढ़ीं आ ओकर अर्थ लिखीं।

2. अपना गाँव-जवार में बेयालिस के आंदोलन का बेरा सुराजी लोग द्वारा गावे वाला कवनो गीत इयाद क के लिखीं।

शब्द-भंडार

पंजंजल	–	कादो-पानी
बिछिलाइल	–	फिसिलल
बेड़ी	–	जंजीर, पैर के बांधे वाला धातु के बनल जंजीर
मूंज	–	एक तरे के पौधा (झाड़ी) जवना से रसरी बनेला
कुरुक	–	जब्त कइल
जुरुमाना	–	दंड

खिसूरे	--	सुसुक-सुसुक के रोवल
लुगरिया	--	फाटल साड़ी
संघाती	--	साथी, इयार
वड़बे	—	भगवाने
नगिचाइल	—	नियराइल

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

अध्याय : बारह

एह पाठ के रचना पाठ्य पुस्तक निर्माण खातिर आयोजित कार्यशाला में भइल बा ।

विषय-प्रवेश

सिनेमा एगो सशक्त कला माध्यम ह । ई जीवन के बहुत गहिरे प्रभावित करेला । एने भोजपुरी में खूब सिनेमा बन रहल बा । गैर-भोजपुरी भाषी क्षेत्रों में भोजपुरी फिल्म खूब चलता । एह सब से भोजपुरी के लोकप्रियता आ ताकत के पता चलता । भोजपुरी में फिल्म बनावे के एगो लमहर आ समृद्ध परंपरा बा ।

निबंध

भोजपुरी सिनेमा : लोकप्रियता के शिखर पर

एह घड़ी भोजपुरी में खूब सिनेमा बन रहल बा । भोजपुरी सिनेमा दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, पंजाब जइसन गैर-भोजपुरी भाषी क्षेत्रों में खूब लोकप्रिय होता । एह जंगहन पर भोजपुरिया लोग बड़हन संख्या में रहेला । ई भोजपुरी सिनेमा के तीसरका उछाल हवे।

भोजपुरी फिल्म बनावे के प्रयास बहुते पहिले से होत रहे बाकिर एकरा सफलता के शुरुआत 1962 में भइल । एही साल 'गंगा मइया तोहें पियरी चढ़इबो' फिल्म रिलीज भइल। ई फिल्म श्री विश्वनाथ प्रसाद शाहाबादी का पइसा से श्री नाजीर हुसेन, श्री रामायण तिवारी जइसन भोजपुरिया अभिनेता के मदद से बनल रहे । एह में गीतकार शंकर शैलेन्द्र आ संगीतकार चित्रगुप्त रहीं । ई दूनो नाम अपना-अपना क्षेत्र में प्रसिद्ध रहे । एकर नायक असीम कुमार आ नायिका कुमकुम रहली । एह फिल्म के पहिलका राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद के भी आशीर्वाद प्राप्त रहे । ई फिल्म भोजपुरिया संस्कृति के उजागर करता । एकर कथानक गाँव का पृष्ठभूमि से लिहल बा। कलाकारन के अभिनय आ संवाद देखनिहारन का मन पर असर डललस । दर्शकन के रुझान देख के भोजपुरी फिलमन कावर निर्माता लोग के रुचि बढ़ल। एह पहिलके दौर में कई गो भोजपुरी फिल्म अइली स जवन काफी नाँव कइली स।

भोजपुरी फिल्मन के दूसरका दौर में 'गंगा किनारे मोरा गाँव', 'दुल्हा गंगा पार के', 'दंगल', 'सुहाग बिंदिया' 'गंगा आबाद रखिहऽ सजनवा के', 'बिहारी बाबू' जइसन कई गो हिट फिल्म बनल। एह दौर में कुणाल भोजपुरी फिल्मन के सुपर स्टार रहस ।

आज तीसरका दौर चल रहल बा जवना में भोजपुरी फिल्मन में खूब उछाल आइल बा। एकर बहुत बड़ बाजार बा । एह दौर में मनोज तिवारी, रवि किशन, दिनेशलाल यादव उर्फ निरहुआ रेक्सावाला स्टार हीरो बाड़े । भोजपुरिया फिल्मन के लोकप्रियता आ बाजार देख के अमिताभ बच्चन सहित कई गो गैर-भोजपुरिया कलाकार एह में काम कर रहल बाड़े । हिंदी फिल्मन के

मशहूर नायक-नायिका आ कलाकार लोग भोजपुरी फिल्मन में काम करे के तइयार बा, काहे कि एह फिल्मन के हिंदी का बाद सऊँसे देश में बाजार बा । भोजपुरी में हर साल अब छव-सात दर्जन फिल्म बने लागल बा ।

भोजपुरी सिनेमा आम जनता के संवेदना के छुवता । फिल्म एगो अइसन माध्यम हवे जवना से भरपूर मनोरंजन त होइबे करेला, एकर उपयोग नवनिर्माण आ सामाजिक सरोकार के गाढ़ बनावे में कइल जा सकत बा । भोजपुरी फिल्मन में आज के गाँवन के बदलत तस्वीर साफ उतरल बा। हिंदी फिल्मन का तुलना में कम लागत में बनला का बादो एकर लमहर बाजार बा । एह में फिल्म-निर्माता तेजी से एह बाजार में लाभ उठा के ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाये का फेर में लाग गइल बाड़े । फिल्म उद्योग के सबसे बड़ जगे मुंबई बा । भोजपुरी फिल्मों में मुंबइये में ढेर बन रहल बा । बाँलीउड खानी भोजपुरी भी जम रहल बा बाकिर ढेर-से-ढेर कमा लेवे का लालच में आज अइसनको फिल्म ढेर आ रहल बा जवना के स्तरीय नइखे कहल जा सकत ।

भोजपुरी क्षेत्र बहुत बड़ बा । भोजपुरी भाषी लोग अपना देश में कोना-कोना में रोजी-रोटी कमाये खातिर पसरल बाड़े । देशे ना विदेशो में भोजपुरियन के संख्या काफी बा। एह से भोजपुरी फिल्मन के देश-विदेश सगरे नीमन बाजार मिल सकत बा । एह से जरूरी बा कि भोजपुरी फिल्म बनाने वाला लोग सावधानी से पटकथा चुनो आ ढंग से ओकर प्रस्तुति करो । सस्ता मनोरंजन करे के रुझान कुछ दिन खातिर भले चमक जाव बाकिर एह से समाज आ भोजपुरी फिल्म उद्योग का स्थायी यश नइखे मिल सकत । भोजपुरी क्षेत्र के संस्कृति, परंपरा आ विकास के चित्रण ठीक से सावधानीपूर्वक होखे के चाही । पश्चिम का नकल से गीत-गवनई के भी अइसन ना बनावे के चाही कि ओपर अश्लीलता के दोष मढ़ाये लागो। भोजपुरी जनमानस बड़ा सहज आ सरल होला। बाकिर जब ऊ कुछ करे के ठान लेला त बिना मंजिल तक पहुँचले दम ना धरे । ई सुझाव कला का हर क्षेत्र में झलकेला ।

भोजपुरी फिलमन के निर्माण खातिर एही क्षेत्र में स्टुडियो बने आ ओकनी के सूटिंगो एही क्षेत्र के दर्शनीय स्थानन पर होखे त बहुत नीमन होई । एह से रोजगार त बढ़बे करी, स्थानीय कलाकारन का भी आपन कला माँजे-संवारे के अवसर मिली । फिल्म-उद्योग रोजगार के एगो अच्छा माध्यम होला । भोजपुरी फिल्म उद्योग एहू दृष्टि से महत्त्वपूर्ण बा ।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **भोजपुरी के पहिलका फिल्म कवन रहे ?**

(क) बलमा बड़ा नादान (ख) गंगा मइया तोहरे पियरी चढ़इबो

(ग) लागी नाहीं छूटे राम (घ) गंगा किनारे मोरा गाँव

2. **'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' कब रिलीज भइल ?**

(क) 1952 में (ख) 1965 में

(ग) 1962 में (घ) 1970 में

3. **भोजपुरी के पहिलकी फिल्म के बनवले रहे ?**

(क) चित्रगुप्त (ख) विश्वनाथ प्रसाद शाहाबादी

(ग) रामायण तिवारी (घ) शैलेन्द्र

4. **भोजपुरी के पहिलकी फिल्म मे हीरोइन के रहे ?**

(क) कुमकुम (ख) नरगिस

(ग) वैजयंती माला (घ) शबाना आजमी

5. **भोजपुरी फिल्मन के दूसरकी दौर में कवन फिल्म ना बनल रहे ?**

(क) दंगल (ख) गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो

(ग) बिहारी बाबू (घ) सुहाग बिंदिया

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भोजपुरी के पहिलकी फिल्म कवना के मानल जाला ?
2. भोजपुरी फिल्मन के शुरुआत कब भइल ? दूसरका दौर के तीन गो फिल्मन के नाँव बताईं ।

3. हिंदी फिल्मन के प्रसिद्ध चरित्र नायक नाजीर हुसेन कवना भोजपुरी फिल्म में काम कइले रहस ?

4. हिंदी के सुपर स्टार भोजपुरी फिल्मन में काम करे के काहे चाहत बा ?

5. तीसरका दौर के भोजपुरी फिल्मन में बड़ स्टार के-के बा ?

6. भोजपुरी फिल्मन के बाजार बहुत बड़ बा काहे ?

7. भोजपुरी फिल्मन के बाजार का विदेशो में हो सकत बा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भोजपुरी फिल्म के इतिहास कब से शुरू होत बा ? पहिलका दौर के कुछ फिल्मन के चर्चा करीं आ ओकनी के खूबियन के रेखांकित करीं ।

2. आज भोजपुरी फिल्मन के का हाल बा ? एकनी का गुणवत्ता पर टिप्पणी करीं ।

3. आज भोजपुरी भाषा, संस्कृति समाज आ विकास पर भोजपुरी फिल्मन के का असर पड़ रहल बा, संक्षेप में बतलाईं ।

परियोजना कार्य

1. कवनो भोजपुरी फिल्म देख के ओकरा कहानी के अपना शब्द में लिखीं आ बतलाईं कि ओमें कवना कलाकार के अभिनय सबसे नीमन लागल ।

2. गाँव में बियाह का बेरा कई तरह के नेगचार होला । एपर एगो फिल्म बनावे के बा। कवनो एगो नेग चुन के ओह दृश्य खातिर संवाद लिखीं ।

शब्द-भंडार

भोजपुरिया	—	भोजपुरी बोले वाला लोग
गैर	—	दोसर
सुपर स्टार	--	लोकप्रिय नायक,
लमहर	—	लंबा, बड़
प्रयास	--	कोशिश

गीतकार	–	गीत बनावे वाला
संवाद	–	बातचीत
देखनिहार	–	देखेवाला
वर्शक रुझान	–	प्रवृत्ति
निर्माता	–	बनावे वाला
मशहूर	–	नामी
मुनाफा	–	नफा, लाभ
पसरल	–	फइलल
नीमन	–	अच्छा
मंजिल	–	लक्ष्य ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL ★ PATNA ★

अध्याय : तेरह

गोरख पांडेय

गोरख पांडेय अपना जनवादी चेतना के लोकप्रिय गीतन खातिर प्रसिद्ध रहले । उनकर जनम 1945 में देवरिया जिला (उत्तरप्रदेश) के एगो गाँव 'पंडित के मुड़ेरवा' गाँव में भइल रहे। उनकर शिक्षा संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय आ काशी हिंदू विश्वविद्यालय में भइल । नक्सलबाड़ी आंदोलन से किसान आंदोलन से आ ग्रामीण विकास खातिर एगो कार्यकर्त्ता का रूप में गोरख पांडेय लगातार जुड़ल रहले । जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में शोध छात्र के रूप में दाखिला लिहलीं । 1985 में उहाँ का 'जन संस्कृति मंच' के संस्थापक महासचिव बनलीं । 29 जनवरी 1989 के गोरख पांडेय । के मउवत हो गइल । 'गोरख पांडेय के भोजपुरी गीत', जीतेन्द्र वर्मा के संपादन में नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली से प्रकाशित भइल बा । 'समय का पहिया' उनका प्रसिद्ध गीतन के संग्रह ह ।

अस्सी का दशक में गोरख के कविता किसान आंदोलन के फइलाव का संगे-संगे विकसित होत गइल बा। क्रांतिकारी संघर्षन से हिलत क्षेत्र के भोजपुरिया समाज गोरख का कविता में अपना जीवंत तेवर का साथे विराजमान बा।

विषय-प्रवेश

इहाँ दिहल गीत में श्रम आ श्रमिक के महत्त्व के एगो मजदूरिन रेखांकित कर रहल बिआ । श्रमिक शोषण कि ओर एह में इशारा कइल गइल बा । 'गोरख पांडेय के भोजपुरी गीत' से ई गीत संकलित कइल गइल बा ।

मेहनत करे वाला मजदूर असल में श्रम के सूरज हवे जेकरा पर धरती के हरियाली निर्भर बा । उहे जग के प्राण ह, जिनगी के पहिया ओकरे मेहनत से डगरत रहेला । ओक श्रम से नया-नया काम होला, काम ।

नेह के पाती

तूँ हवऽ श्रम के सुरुजवा हो, हम किरिनिया तोहार

तोहरा से भगली बन्हनवा के रतिया
हमरा से हरियर भइली धरतिया

तूँ हवऽ जग के परनवा हो, हम संसरिया तोहार
तूँ हवऽ श्रम के सुरुजवा हो, हम किरिनिया तोहार।

तोहरा से डगरेला जिनगी के पहिया
हमरा से बन-बन उपजेले रहिया

रचना के हवऽ तूँ बसूलवा हो, हम रुखनिया तोहार
तूँ हवऽ श्रम के सुरुजवा हो, हम किरिनिया तोहार।

हमरा के छोड़िके न जइहऽ विदेसवा
जइहऽ त भूलिहऽ न भेजल सनेसवा

तूँ हवऽ नेहिया के पतिया हो, हम अछरिया तोहार
तूँ हवऽ श्रम के सुरुजवा हो, हम किरिनिया तोहार।

तोहरे हथौड़वा से काँपे पूँजीखोरवा
हमरे हँसुअवा से हिले भँइखोरवा

ABDIEL SOLU ABSO

तूँ हवऽ जूझे के पुकरवा हो हम तुरहिया तोहार
तूँ हवऽ श्रम के सुरुजवा हो, हम किरिनिया तोहार।

चाहे जहाँ रहऽ जो न मथवा झुकइबऽ
हमरा के हरदम संगे-संगे पइबऽ

तूँ हवऽ मुकुति के धरवा हो, हम लहरिया तोहार
तूँ हवऽ श्रम के सुरुजवा हो, हम किरिनिया तोहार।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'नेह के पाती' के रचनाकार के ह ?

(क) गोरख पांडेय (ख) राहुल सांकृत्यायन

(ग) महेन्द्र शास्त्री (घ) विजेन्द्र अनिल

2. गोरख पांडेय कहाँ के रहनियार रहीं ?

(क) सीवान (ख) आरा

(ग) बलिया (घ) सासाराम

3. पठित कविता कवना किताब से संकलित बा ?

(क) श्रम के सूरुज (ख) गोरख पाण्डेय के भोजपुरी गीत

(ग) नवजागरण (घ) एह में से कवनो ना

4. गीत में श्रमिक के का सनेस विहल बा ?

(क) सब केहू के गोड़ लागे के (ख) कहहूँ माथ ना झुकावे के

(ग) जूझे के पुकार बने के (घ) जिनगी के पहिया डगरवत रहे के

5. केकरा हथौड़ा से पूँजीखोरवा काँपे ला ?

(क) सुरुज के (ख) संसार के

(ग) मजदूर के (घ) सरकार के

6. गोरख पांडेय के मउवत कब भइल ?

लघु उत्तरीय

1. गोरख पांडेय के परिचय लिखीं ।

2. पठित कविता में श्रम के सुरुज केकरा के आ काहे कहल गइल बा ?

3. पठित कविता के मथेला (शीर्षक) के सार्थकता पर विचार करीं ।

4. मुकुति के धार के बा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'साहित्य में श्रम के महिमा स्वीकारल साहित्य के महत्त्वपूर्ण घटना बा ।'–गोरख पांडेय के कविता के आलोक में एह कथन के व्याख्या करीं ।

2. गोरख पांडेय के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रकाश डालीं ।

3. साहित्य में विचारधारा पर टिप्पणी लिखीं ।

परियोजना कार्य

1. जन संघर्ष में गीत के महत्त्व बताईं ?

2. 'रोपनी' भा 'सोहनी' का सभे मजदूरिन लोग गीत गावेला । अइसन कुछ गीतन के पता करके लिखीं ।

3. श्रमिक के महानता दर्शावे वाला कवना घटना के वर्णन करीं ।

शब्द-भंडार

बंहनवा – बंधन
परनवा – प्राण
श्रम – मेहनत
भूँइखोखा – भूमि हड़पे वाला
संसरिया – साँस
डगरल – लुढ़कल
तुरही – एगो बाजा, जवन मुँह से फूक के बजावल जाला
मथवा – माथा, सिर
धरवा – धारा, पृथ्वी
बसुला – एगो औजार, जवना से लकड़ी सेल्हे-काटल जाला
रुखानी – लकड़ी छीले खातिर एगो छोट औजार

अध्याय : चउदह

एक पाठ के रचना पाठ्य पुस्तक निर्माण खातिर आयोजित कार्यशाला में भइल बा,

विषय-प्रवेश

कबड्डी भारत के गाँवन में खेलल जायेवाला एगो ग्रामीण खेल ह, जवना में कवनो सर-सामान के जरूरत ना होला । ई मनोरंजन का साथे स्वास्थ्य, ताकत, हिकमत, फुर्ती आ तुरते सोच लेवे जइसन मानासिक प्रक्रियो के लेहाज से उपयोगी बा । आज त एह देहाती खेल के अंतरराष्ट्रीय महत्त्व प्राप्त बा। स्वाभाविक बा कि अब ई निर्धारित लंबाई-चौड़ाई के मैदान, खेलाड़ी के संख्या आ अंतरराष्ट्रीय नियमन के अनुसार देश-विदेश में खेलल जाला । एह में गलत-सही देखेवाला निर्णायकों लोग रहेला । यद्यपि क्रिकेट के आगे एकर लोकप्रियता दब गइल बा, बाकी साधारण मनई कालगे एकर महत्त्व निर्विवाद बा ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

कहानी

कबड्डी

विद्यालय में शिक्षाप्रद फिल्म देखावे के योजना में ओह दिन 'लगान' फिल्म चलत रहे। जब अंग्रेजन साथे गँवई लोगन के क्रिकेट खेले के दृश्य आइल त एगो लइका अपना शिक्षक राकेश बाबू से पूछ बइठल–"सर ! गाँव के अनाड़ी लोग एतना बढ़िया कैच कइसे लेत बा ?" दोसर लइका जवाब देलक–"एह से कि गुल्ली-डंडा में ऊ लोग गुल्ली लोकेला ।"

तीसरका के कहनाम रहे–"तब त कबड्डी आ क्रिकेटों में कुछ समानता होई !

अब राकेश बाबू गंभीर हो गइलन । ऊ फिल्म रोकत कहलन–"बढ़िया प्रसंग छि गइल । सबके राय होखे त काहे ना पहिले अपना कबड्डी का बारे में जान लेहल जाव ।"

सब लड़िका "हं-हं" कहे लगलनसऽ ।

राकेश बाबू तब खड़ा होके समुझावे लगलन–

"आज कबड्डी एगो अंतरराष्ट्रीय खेल का रूप में भले ही जानल जाला, बाकिर साँ पूछी त कबड्डी एगो लोकप्रिय भारतीय खेल ह । एह खेल के सबसे लमहर विशेषता ई ह वि एकरा में ना कवनो साज-सामान के जरूरत बा ना, लमहर लंबाई-चौड़ाई लेले मैदान के छोटो जग में आत्मविश्वास का बल पर विरोधी दल के ललकारल, अपना दल के उत्साह बढ़ावल अ निडरता के प्रदर्शन के भाव एह से सीख लेल जाला । अइसन खेल भोजपुरी के गाँव-गँवई में पहिलहूँ खेलल जात रहे बाकिर 1920 में सतारा (महाराष्ट्र) में परांजपे जी एह खेल खातिर निय निर्धारित करे के काम कइलन । एकरा बाद 1938 में पहिले पहिल एकर अखिल भारती प्रतियोगिता आयोजित भइल । 1944 में भारतीय ओलंपिक संघ एकरा नियम के मंजूरी आ मान्य देलस । भारत के राजधानी दिल्ली में 1982 ई. में आयोजित नउवाँ एशियाई खेल में एकरो ए खेल के रूप में सम्मिलित कइल गइल ।

रमेश : सर ! त का कबड्डी खेले ला मैदान के कवनो लंबाई-चौड़ाई निर्धारित नइखे ?

शिक्षक : जब नियम से एह खेल के बाँध देहल गइल त निर्धारण जरूरी हो गइल। अइसे त कबड्डी के मैदान चौरस आ आयताकार होला बाकिर वयस्क, महिला आ किशोर खातिर एकर अलग-अलग मानक लंबाई-चौड़ाई निर्धारित बा । वयस्क लोग ला जहवाँ। 13 मीटर × 10 मीटर के मैदान होला उहँवे महिला आ किशोर खातिर 11 मीटर × 8 मीटर के मैदान होला । मैदान का बीचोबीच एगो मध्य रेखा होला जेकरा दूनों ओर एक-एक प्रतिद्वन्द्वी दल खड़ा होले । एकरा अलावे चारू ओर से लाइन खींच के एगो घेरा बना देहल जाला, जेकरा बाहर गइला पर खेलाड़ी आउट मानल जालन ।

मोहन : हरेक दल में केतना खेलाड़ी होला सर ?

शिक्षक : हरेक दल में 12 खेलाड़ी होला बाकिर एक समय में साते खेलाड़ी मैदान में उतरेला, शेष पाँच खेलाड़ी सुरक्षित रहेला जेकर जरूरत पड़ला पर दल उपयोग करेला।

खेल के शुरुआत टॉस से होला । टॉस जीतेवाला अपन मन पसंद साइड चुनेला आ पहिले उहे अपना ओर से कबड्डी भेजेला । कबड्डी जानेवाला खेलाड़ी एके साँस में 'कबड्डी-कबड्डी' बोलत विपक्षी दल के खेलाड़ियन के छू के भागे के प्रयास करेला । ऊ जवना-जवना खेलाड़ी के छू के मध्य रेखा पार क के अपना दल में आ जाला ऊ सब खेलाड़ी मुअल मानल जालन । आ जो कबड्डी जायवाला खेलाड़ी मध्य रेखा के ओही पार पकड़ा जाले आ ओकर साँस टूट जाले माने एके साँस में 'कबड्डी-कबड्डी' कहल रूक जाले त कबड्डी जायेवाला खेलाड़ी मुअल मान लेल जालन । ईहे क्रम बारी-बारी से होत रहेला। दूनो दल का घर में एगो रेखा होला। कबड्डी गइला पर एक बेर ए ओकरा पार कइल जरूरी होला ।

सलीम : कबड्डी खेले के समय केतना निर्धारित बा ?

शिक्षक : खेल के अवधि वयस्क में चालीस मिनट आ महिला आ किशोर में तीस मिनट होला । बीच में पाँच मिनट के विश्राम दिहल जाला ।

लक्ष्मी : पोशाक ?

शिक्षक : एक पोशाक हाफ पैंट आ गंजी होला । गंजी पर खेलाड़ी के नंबर छपल रहेला ।

फातिमा : जीत हार के फैसला कइसे होला ?

शिक्षक : विपक्षी दल के एक खेलाड़ी के आउट कइला पर आक्रामक दल के एक अंक मिलेला । अगर आउट होत-होत कवनो दल के कुल खेलाड़ी आउट हो जाला त ओह दल के विपक्षी विजयी दल के 'लोन्ना' मिलल कहल जाला । एकर अंक अलगा मिलेला। पूरा खेल में जवन दल अधिका अंक पावेला, ऊ विजयी घोषित होला ।

एगो लइका बीचे में टुभुकल–''खेल में गाल होखे त ?'' सब लड़िका हँसे लगलन स । शिक्षको के हँसी आ गइल । ऊ कहत गइलन–''चोरवा के मन बसे ककड़ी के खेत में।'' फेर गंभीर होत कहलन–

''बेईमानी कइसे होई ? खेल के नियंत्रण खातिर एगो रेफरी, दूगो लाइंस मेन, दू गो अंपायर आ एगो स्कोरर होलन । रेफरी कवनो खेलाड़ी के नियम के उल्लंघन कइला आ अनुशासन भंग कइला पर चेतावनी दे सकेला आ विपक्षी दल के ओकरा बदला में अंक दे सकेला । खेल से ओकरा के बाहरो कइल जा सकेला । बाकियो निर्णायक आपन-आपन काम करत रहेला । त अब तू लोग बतावऽ कबड्डी में आउर कवन-कवन बोल बोलल जाला ?''

रमेश : 'आम छू-आम छू, कौड़ी बादाम छू ।

मोहन : चल कबड्डी आइला, तबला बजाइला

तबला के पइसा, लाल गलइचा ।

सलीम : आइले कबड्डी डेरइह जनि होऽ

हाथ-गोर टूटी त रोइह जनि होऽ ।

वर्ग में ठहाका मच जाता । शिक्षक सबके शांत कके 'लगान' फिल्म के बाकी हिस्सा देखावे लागताड़न ।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **कबड्डी में प्रत्येक दल में केतना खेलाड़ी होला ?**

(क) 7 (ख) 8

(ग) 12 (घ) 6

2. **किशोर खेलाड़ियनल खातिर कबड्डी के मैदान के लंबाई-चौड़ाई का होला ?**

(क) 13 × 10 मीटर (ख) 11 × 8 मीटर

(ग) 8 × 6 मीटर (घ) 15 × 11 मीटर

3. **कबड्डी खेल के नियम पहिले पहल कब बनल ?**

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

(क) 1911 (ख) 1920

(ग) 1982 (घ) 1952

4. **पहिले पहल कवना जगहा पर कबड्डी के एशियाई खेल में शामिल कइल गइल ?**

(क) चेन्नई (ख) बंबई

(ग) पटियाला (घ) दिल्ली

5. **रिक्त स्थान में सही शब्द भरीं–**

(क) पहिले पहल कबड्डी के नियम .... बनवलन ।

(ख) कबड्डी में कवना खेलाड़ी का मुअला पर विपक्षी दल के .... अंक मिलेला।

(ग) कबड्डी में एक समय मैदान पर एक दल के .... गो खेलाड़ी खेलेला ।

(घ) कबड्डी में पहिले कवन दल कबड्डी भेजी एकर फैसला .... से होला ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

6. कहानी में जब खेल में बेइमानी के बात एगो लइका उठइलक त का भइल ?

7. कबड्डी में लोन्ना का होला ?

8. किशोर लोगन ला कबड्डी खेल के केतना समय निर्धारित बा ?

9. कबड्डी जाय में खेलाड़ी के मुँह से निकलल तीन गो बोल लिखीं ।

दीघ उत्तरीय प्रश्न

1. 'कबड्डी' कहानी के सारांश लिखीं।

2. पठित कहानी के शिल्प पर विचार करीं।

परियोजना कार्य

1. गाँव-गंवई में खेलल जायवाला कबड्डी जइसन कवनो दोसर खेल के वर्णन दू छात्रन का बीच वार्तालाप का रूप में लिखीं ।

शब्द-भंडार

अनाड़ी – जेकरा कवनो बात के जानकारी ना होखे

गुल्ली-डंडा – एगो भारत के गाँवन में खेलल जायवाला खेल

चौरस – चौकोर, सभतर बराबर, समतल

आयताकार – चार सरल रेखा से घिरल अइसन क्षेत्र जेकर दूनो लंबाई आ दूनो चौड़ाई बराबर होला आ सभ कोण के होला ।

एशियाई खेल – एशियाई देशन के बीच प्रति चार वर्ष पर होखे वाला खेल प्रतियोगिता ।

आक्रामक दल – जवन दल विपक्षी दल पर आकमण करत कबड्डी जनला ।

अध्याय : पन्द्रह

रमेशचन्द्र झा

रमेशचन्द्र झा भोजपुरी-हिंदी सुप्रसिद्ध रचनाकार रहीं । उहाँ के जनम पूर्वी चंपारन जिला के सुगौली अंचल का फुलवरिया गाँव में भइल रहे । पिता श्री लक्ष्मीकान्त झा जिला के एगो प्रमुख नेता रहीं । रमेशो जी बयालिस का आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिहली । जेलो गइलीं । उनका स्वतंत्रता-सेनानी के ताम्रपत्र आ पेंशन मिलल । ऊ बहुत दिन ले चंपारन जिला बोर्ड प्रेस के मैनेजर का रूप में काम करत रहले आ 1984 में सेवानिवृत्त भइले । 7 अप्रिल 1994 के रात में अपना धरती पर छियासठ-सड़सठ का उमिर में उहाँ के निधन हो गइल ।

रमेशचन्द्र झा जी उपन्यास, कहानी, कविता, गीत, निबंध संस्मरण आ बाल-साहित्य का अलावा शोध भी कइलीं । पचास गो से ढेर किताब उहाँ के प्रकाशित बा । हिंदी के तीन गो साप्ताहिक पत्रन के उहाँ का संपादनो कइलीं । उहाँ के तीन गो किताब चंपारन की साहित्य साधना', चंपारन : साहित्य और साहित्यकार' आ 'अपने और सपने' भोजपुरी में लिखल उहाँ के उपन्यास 'सुरमा सगुन बिचारे बा' अपना ढंग के महत्त्वपूर्ण कृति बा। ई 'भोजपुरी कहानियाँ' । (वाराणसी) में धारावाहिक छपल रहे । पचास का दशक में उहाँ गीत-गजल भोजपुरीं, 'अँजोर' में छपे ।

विषय-प्रवेश

एक भौतिकवादी युग में स्वार्थ क समुंदर में आकंठ डूबल समाज के यथार्थ आ भयावह चित्र एह गीत में उकेरल गइल बा । हर आदमी स्वार्थ में आन्हर होके चोर, बेइमान, व्यभिचारी आतंकी इत्यादि बन रहल बा, जवना से समाज से सात्विक भाव के लोप हो रहल बा । चारो ओर आतंक के साया में जिए खातिर मजबूरी होत जा रहल बा।

आग पर तप रहल जिन्दगी

आग पर तप रहल जिन्दगी
आमने-सामने आदमी !
जान पहचान के चेहरा,
लग रहल आजकल अजनबी !
आज बारूद का बीज के,
कह रहल लोग चम्पाकली !
कर्म के ग्रंथ अब के लिखी
लिख रहल देश रोकड़-बही !
आज पहरू लुटेरा भइल,
काल्ह तक जे रहल संतरी ।

हर गली में दु:शासन इहाँ,
हार बइठल कहीं द्रौपदी !
आदमी का बदे आचमन,
देवता का बदे अंजली !
हर दिसा से धुआँ उठ रहल,
हर नगर गाँव में सनसनी !

हस्त रेखा बिगड़ते गइल,
भाग्य पढ़ले बहुत ज्योतिसी !
मेनका हो गइल कुलबधू,
घोर अपराधिनी कुलवती !
आज इनके समुन्दर मिलल,
पी गइल जे नदी के नदी !

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **जिन्दगी कवना चीज पर तप रहल बा ?**

(क) आग पर (ख) बारूद पर

(ग) धूप में (घ) एह सब पर

2. **आज के परिस्थिति में पहचानलो चेहरा कइसन लाग रहल बा ?**

(क) डरावना (ख) उदास

(ग) अजनबी (घ) विकृत

3. **कवना चीज का प्रभाव में लोग बारूद के चंपाकली समुझता ?**

(क) राजनीति के प्रभाव में (ख) भौतिकता का प्रभाव में

(ग) पूँजीवाद आ प्रभाव में (घ) समाजवाद का प्रभाव में

4. **आज के बिगड़ल परिस्थिति में के कुलवधू हो गइल हवा ?**

(क) उर्वशी (ख) द्रौपदी

(ग) अपराधिनी (घ) मेनका

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. द्रौपदी काहे हरि के बइठ गइल बाड़ी ?
2. काल्ह तक जे संतरी रहे उ आज का भ गइल बा ?
3. आदमी के बदे 'आचमन' आ देवता का बदे अंजली में कवन भाव छिपल बा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. रमेशचन्द्र झा जी अपना एह गीत में का जवन विकृत परिस्थिति के वर्णन कइले बाड़ें ओकर संक्षेप में वर्णन करीं ।
2. द्रौपदी आ मेनका के कहानी संक्षेप में लिखीं ।

परियोजना कार्य

1. देश के सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक परिस्थिति में आइल विकृति से संबंधित कवनो आउर कविता खोज के प्रस्तुत करीं ।
2. समय का अनुसार समाज में आइल बदलाव पर अपना दोस्तन का संगे बइठ के चर्चा करीं।

शब्द-भंडार

अजनबी – अनजान, जेकरा से पहिले चिन्हा-परिचे ना होखे

रोकड़-बही – रुपिया-पैसा के हिसाब लिखे वाली बही

पहरू – पहरेदार, पहरुआ

संतरी – सिपाही, रक्षक

आचमन – भोग के बाद जल पिआवल, पूजा में जल-स्पर्श

अंजली – फूल समर्पित कइल, अंजुरी के भर के फूल चढ़ावल

लुटेरा – लूटे वाला

सनसनी – आतंक आ भय के माहौल ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

अध्याय : सोलह

एक पाठ के रचना पाठ्य पुस्तक निर्माण खातिर आयोजित कार्यशाला में भइल बा

विषय-प्रवेश

लोक जीवन से स्वाभाविक रूप से उपजल अइसन नाटकन में आम आदमी के सुख-दुःख के सही अभिव्यक्ति भइल बा। भोजपुरिया संस्कृति के सोर बड़ी गहिरा गइल बा। इहे वजह बा कि पश्चिमी सभ्यता के चकाचौन्ध के बादो एजवा के संस्कृति बाचल बा। परंपरागत रूप से चलल चल आवल रीति-रिवाज आजो कवनो-ना-कवनो रूप में प्रयोग में बा। लोक नाटक, संवाद आ सुख-दुख के अभिव्यक्ति के एगो बरियार विधा रहल बा।

अइसन में 'भोजपुरी लोकनाट्य डोमकच' निबंध ना खाली भोजपुरी क्षेत्र के लोक नाटकन से परिचित करावता बलुक आजो के परिवेश में ओकर उपयोगिता दर्शावता।

निबंध

भोजपुरी लोकनाट्य डोमकच

भोजपुरिया जगत सांस्कृतिक रूप से बड़ी संपन्न बा । एजवाँ जीवन के डेगे-डेगे पर्व-त्यौहार, नेगचार मिलेला । भोजपुरिया लोग बड़ी उत्सवप्रिय होला । भोजपुरी क्षेत्र में कई तरह के लोक नाटकन के प्रचलन बा, जवन सहज-सरल ह्दय भोजपुरिया लोग के जिनगी के एगो अभिन्न अंग बा ।

अइसने एगो लोकनाट्य बा डोमकच । जहिया लड़िका के बारात जाला ओह दिन रात में मेहरारू लोग एकरा के खेलेला । एजवाँ शादी-बियाह में एतना नेगचार होला कि महिनवन एकर लरे ना टूटे । बियाह में मरद लोग त बारात चल गइल रहेला घर में खाली मेहरारूये लोग बाँच जाला । मेहरारू लोग बटुरा के अपने में नाटक खेलेला । इहो एगो उत्सवे खानी होला । मेहरारू लोग के प्रतिउत्पन्नमतित्व अपना जिनगी से जुड़ल अनेक प्रसंगन के संवाद गढ़ के हाव-भाव का संगे नाटक बना लेला । उहे लोग पुरुष पात्रो के भूमिका निभावेला । मरदन के वर्चस्व का खिलाफ एह में मेहरारू लोग के दमित इच्छा के भी अभिव्यक्ति खुल के होला। हँसी-मजाक आ व्यंग्यपरक आभी-गाभी से भरल गीतन का जरिए आ हाव-भाव के बेहिचक प्रयोग से नारी-जीवन के विभिन्न स्थितियन के खुलासा हो जाला । 'जट-जटिन' खानी 'डोमकचो' एगो नारी कौतुक हवे आ दूनूँ में कुछ-कुछ मेलो बा । दूनू के नायिका के मरद कामचोर होला, अपना मेहरारू के छोड़ के कमाये खातिर परदेस जाला आ दूनू में शिकायत एह बात खातिर होला कि ऊ अपना मेहर खातिर कुछ ना कइलस । नायक कामचोर, बुरबक, साधारण मनई, पियक्कड़ आ नायिका सुंदर चतुर-चल्हाक होले।

डोमकच के एगो कथा में नायक-नायिका डोम जाति के बा । सुन्नर-सुघड़ नायिका से खीसिया के नायक कोलकत्ता चल जाता आ ओहिजा ढेर दिन ले रह जाता । नायिका पर सिपाही आ राजा दूनों के नजर लागल बा । मजबूरी आ दबाव में आके नायिका राजा के रानी बन के महल में रहे लागल बाड़ी । राजा के बिअहुती मेहर, बहिन आ मातारी डोमिन से खार खाता लोग। राजा नायिका डोमिन के भरोसा देत बाड़न कि ओकरा बेटा के बियाह खूब धूमधाम से करिहें। नायक कमा के लवटत बा । ओकर पलानी उजड़ चुकल बा आ ओकर मेहरियो अलोपित हो गइल बिआ । चूड़ीहार से ओकरा पता चल जाता कि ओकर मेहरारू राजा किहाँ रहत बिआ । ऊ भेष बदल

के ओकरा से मिलत बा । नायिका अपना पति का जवरे रहे खातिर तइयार हो जातिया । डोम नायक सफल हो जाता आ राजा का घर के सब खिलकत सभका सोझा आ जात बा । नाटक नायक-नायिका का बियाह का खुशी में खतम होता । नाटक इ संदेश छोड़ जाता कि चाहे जइसन होबे, अपने घर-परिवार आ परिजन लोग प्रिय होला, अपना लायक होला आ ओहीं लोग से सच्चा सुख मिलेला ।

अब एह नाटक का क्रम में शादी के प्रसंग लइका जनमे के प्रसंग, नायक-नायिका के मनुहार भा दांपत्य जीवन के प्रसंग नायक के परदेस गइला पर वियोग आ विरह के प्रसंग, सुख आ गरीबी के दृश्य आदि आकर्षण विन्दु होला आ मेहरारू सन के बटोराइल जमात हरेक प्रसंग के नाच-गा के जीवंत बना देला । एमे मनोरंजन का जवरे नारी-जीवन के भोगल यथार्थ प्रस्तुत हो जाला । बीच बीच में नाच, संवाद, गीत, समूह नृत्य आ कतना औरत के जोकरई आ मरद बनल औरत के मरदानगी के खिलकत मजेदार होला ।

आज के बदलल परिवेश में मनोरंजन के अनेक साधन, रेडियो, टी. वी., सिनेमा आदि हो गइल बा । कुछ लोग का 'डोमकच' में फूहड़पन लउकेला । बाकिर साँच बात त ई बा कि एह में भारी सांस्कृतिक गरिमा बा ।

डोमकचे खानी आउर लोकनृत्य आ लोकनाट्य प्रचलन में रहल बा जइसे हुडका के नाच, गोड़ऊ नाच, धोबी नृत्य, जोगीरा, हरपरौली आदि ।

डोमकच के एगो संवाद-गीत

अनार कलिया डोमिनी तोर डोम कहाँ गइले ?
डोम हमर हउ गुनी-गवैया, महफिल-महफिल गइले ।....
टिकुली सटले, सेनूर भरले, सब सिंगारो कइले
अनार कलिया डोमिनी तोर डोम कहाँ गइले ?
बज्जर पड़ो मोर एह देहिया पर अनका से लोभइले
अनार कलिया डोमिनी तोर डोम कहाँ गइले ?
डोम हमर हउ हरबिसना हँसवाके राजा गइले
अनार कलिया डोमिनी तोर डोम कहाँ गइले ?

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. डोमकच कइसन नाटक बा, लोकनाटक कि शिष्ट नाटक ?
2. डोमकच कवना अवसर पर खेलल जाला ?
3. डोमकच कवना बेरा खेलल जाला ?
4. डोमकच में मुख्य रूप से कवन-कवन पात्र होलन ?
5. डोमकच केकरा द्वारा कब खेलल जाला ?
6. **डोमकच से मिलत-जुलत कवन नाटक ह ?**

   (क) नौटंकी (ख) जट-जटिन

   (ग) रामलीला (घ) नेटुआ नाच

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बिहार के कवन-कवन क्षेत्र में डोमकच खेलल जाला ?
2. जट-जटिन आ डोमकच में कथा लेके का समानता बा ?
3. डोमकच के नायक के का आदत रहे ?
4. डोमिन राजा घरे काहे चल गइली ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. डोमकच के कहानी संक्षेप में लिखीं ।
2. डोमकच कब होला
3. डोमकच के कवनो गीत लिखों लिखीं ।
4. लोकनाटकन के नाम गिनाईं

5. डोमकच में पुरुष पात्र के अभिनय के करेला ?

6. भोजपुरिया जगत सांस्कृतिक रूप से कइसन बा ?

परियोजना कार्य

1. कवनो के डोमकच सुनल बात लिखीं ।

2. पाठ से बाहर से दूगो लोकनाटक के उदाहरण लिखीं ।

3. अपना आस-पास डोमकच के नायक मतिन कवनो पात्र होखे त ओकर चरित्र लिखीं।

4. नाटक के कवनो अइसन आपबीती के बात लिखीं जे आजो इयाद आवेला ।

शब्द-भंडार

सोर	–	जड़
नेगचार	–	विधि-बेहवार का अवसर पर देवल गइल उपहार
उत्सव प्रिय	–	खुशी के समारोह पसन्द करेवाला
उत्सव	–	खुशी के समारोह
प्रतिउत्पन्नमतित्व	–	हाजिर जवाबी
वर्चस्व	–	अधिका अधिकार
दमित	–	दबंल
नायिका	–	नाटक में मुख्य भूमिका निभावेवाली महिला
बिअहुती	–	बिआहल या बिआह कइल
अलोपित	–	गायब
नायक	–	नाटक मुख्य भूमिका निभावेवाला पुरुष पात्र
संदेश	–	खबर

दांपत्य – पति-पत्नी के समिलात रहल

जीवंत – जिअतार

परिवेश – रहे-सहे के वातावरण

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL ★PATNA★

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL ★PATNA★

व्याकरण आ रचना

चिट्ठी

कार्यालयीय, पारिवारिक आ निजी पत्र के चिट्ठी कहल जाला । पत्र दु तरह के होला–औपचारिक आ अनौपचारिक । 'चिट्ठी' अनौपचारिक पत्र के अंतर्गत आवेला। चिट्ठी में निजी परिचय के महत्त्व होला । दू गो व्यक्ति के विचारन आ समाचारन से एक-दूसरा के परिचित करावे वाला सेतु बा–चिट्ठी । एह से चिट्ठी में तथ्य, सूचना के साथ-साथ व्यक्तिगत भावना के भी महत्त्व होला । माता, पिता, भाई, बहन, रिश्तेदार, मित्र, पदाधिकारी आदि के लिखल जाए वाला पत्र चिट्ठी के अतर्गत आवेला । चिट्ठी लिखे के एगो ढाँचा निर्धारित बा, ओही ढाँचा पर चिट्ठी लिखाला । घरेलू बात आ आत्मीयता के भाव चिट्ठी के विशेषता होला । चिट्ठी के व्यक्तिगत पत्र भी कहल जाला ।

आदर्श चिट्ठी के नमूना–

मित्र के परीक्षा में उत्तीर्ण भइला पर बधाई–

सीवान

30.11.2008

प्रिय इयार रमेश,

नमस्कार ।

ई जानके बहुत खुशी भइल कि तू दसवाँ के परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास कइलऽ हऽ। तहरा ई सफलता पर हम हृदय से बधाई देत बानीं । हमरा पूरा विश्वास बा कि आगे भी तू परिश्रम करके अइसने सफलता प्राप्त करबऽ । भगवान से प्रार्थना बा कि तहार सब मनोरथ पूरा होखो । हमरा आशा बा कि तू भविष्य में अपना परिवार के नाम ऊँचा करबऽ । घर में सबके यथोचित प्रणाम आ आशीष कहिहऽ ।

भविष्य के कार्यकम के बारे में जल्दिए सूचित करिहऽ ।

तहार लंगोटिया इयार

विमल

कार्यालयी आवेदन पत्र

पत्र दू तरह के होला–औपचारिक आ अनौपचारिक । कार्यालयी-आवेदन पत्र औपचारिक पत्रन के अंतर्गत आवेला । कार्यालयी आवेदन पत्र में निजी परिचय के संभावना ना रहेला। एह में औपचारिक पहलू आ बात के स्पष्ट ढंग से राखले प्रधान होला । एह में तथ्य आ सूचना के अधिक महत्त्व दिहल जाला । अइसन में व्यक्तिगत भावना के कवनो महत्त्व ना होला। संपादक नगर निगम अधिकारी, कार्यालय प्रधानमंत्री, रेलवे अधीक्षक, पोस्टमास्टर आदि के लिखल जाए वाला पत्र कार्यालयी-आवेदन पत्र के अंतर्गत आवेला ।

कार्यालयी आवेदन पत्र लिखे के एगो सुनियोजित ढाँचा होला । पत्र के शुरुआत उत्तर पुस्तिका के पृष्ठारंभ से होके ओही पृष्ठ में नीच तक समाप्त हो जाए के चाहीं, अइसने पत्र के आदर्श कार्यालयी पत्र मानल जाला ।

आदर्श कार्यालयी आवेदन पत्र के उदाहरण

पटना नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी के पत्र लिखके अपना मुहल्ला के सफाई खातिर अनुरोध–

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी,

पटना नगर निगम

पटना (बिहार) ।

विषय–मोहल्ला के सफाई करावे खातिर अनुरोध ।

महोदय,

हम राऊर ध्यान अपना मोहल्ला में फइलल गंदगी का ओर आकृष्ट करावे के चाहत बानीं। रऊआ ई जान के आश्चर्य होई कि हमनीं के मोहल्ला में पिछला बीस दिन से कवनों सफाई कर्मचारी नगर निगम का ओर से काम पर नइखे आइल । मोहल्ला में चारों ओर कूड़ा-कर्कट के अंबार जगह-जगह लाग गइल बा । कूड़ा डाले खातिर कवनो निश्चित व्यवस्था निगम का ओर से नइखे कइल गइल ।

आज स्थिति ई बा कि मोहल्ला के वातावरण एकदम दूषित हो गइल बा, जेहसे सड़क पर चलल मुश्किल हो गइल बा । नालियो के सफाई बहुत दिन से नइखे भइल । चारो ओर मच्छर के प्रकोप बढ़ गइल बा, जवना चलते बीमारी फइले के खतरा बन गइल बा । वर्षा ऋतु के शुरुआत हो गइल बा, ई स्थिति रही तऽ जीअल मुश्किल हो जाई ।

श्रीमान् से निवेदन बा कि जल्दी से जल्दी मोहल्ला के निरीक्षण कराके नियमित सफाई के उचित व्यवस्था कराई, ना तऽ मोहल्लावासिअन के स्वास्थ्य पर एकर भयंकर कुप्रभाव पड़ी। रऊरा ओर से उचित कार्यवाही भइला पर हमनी राऊर आभारी होखब ।

दिनांक : 20.5.2008

प्रार्थी

समस्त निवासी

ब्लॉक ए, राजीवनगर, पटना

निबंध-लेखन

निबंध के गद्य के कसौटी मानल गइल बा । ई गद्य के उत्कृष्ट रूप होला । निबंध-लेखन एगो कला हऽ । एकर क्षेत्र व्यापक होला । निबंध लिखे खातिर भाषा पर पकड़ जरूरी होला। निबंध के माध्यम से छात्र के ज्ञान, अनुभव विचार आऊर भाव के अभिव्यक्ति होला। अनुभव आ ज्ञान के कवनो क्षेत्र निबंध के विषय बन सकत बा ।

निबंध के प्रकार

निबंध मुख्यतः तीन प्रकार के होले–

(1) विचार प्रधान निबंध–एकरा अंतर्गत धर्म, राजनीति, घटना-प्रधान, ज्ञान, दर्शन, समस्या आदि से जुड़ल निबंध आवेला ।

(2) वर्णन प्रधान निबंध–एकरा अंतर्गत वस्तु, स्थान, मेला, प्राकृतिक दृश्य, त्योहार, ऋतु आदि से जुड़ल निबंध आवेला ।

(3) भाव प्रधान निबंध–अइसन निबंध में भाव के प्रधानता होला । एकरा अंतर्गत अहिंसा, संस्कार, आतंकवाद, मानवता, संस्कृति, सत्संगति आदि से जुड़ल निबंध आवेला।

निबंध के अंग (भाग)

'निबंध-लेखन' के मुख्यतः चार भाग होला–

(1) भूमिका (2) विषय-वस्तु (3) विषय-विस्तार (4) उपसंहार ।

निबंध के विशेषता

निबंध के आकार छोट आ गद्यमय होखे के चाहीं ।

निबंध में शुरू से अंत तक विषयगत-तारतम्य बनल रहेके चाहीं ।

भाषा-शैली रोचक, ललित आ जीवंत होखे के चाहीं ।

निबंध निर्धारित शब्द-सीमा के भीतर पूरा करे के चाहीं ना त दीर्घ निबंध उत्कृष्ट मानल गइल बा, ना छोट ।

विराम चिह्न के सही प्रयोग होखे के चाहीं ।

निबंध लेखन अभ्यास से आसान हो जाला । कवनो विषय पर निबंध लिखे के पहिले ओह विषय पर चिंतन-मनन कर लेवे के चाहीं । निबंध रोचक आ सारगर्भित होखे के चाहीं। निबंध के आरंभ आ अंत आकर्षक होखे के चाहीं । निबंध में विषयगत व्यापक विवेचना का साथे-साथे शैली में लेखक के निजता के झलक भी रहे के चाहीं ।

फीचर-लेखन

'फीचर-लेखन' के आशय हऽ–मनोरंजनपूर्ण समाचार । 'फीचर' में मनोरंजन के पहिलका स्थान होला, समाचार आ सूचना के स्थान बाद में आवेला । लेकिन मनोरंजन आ सूचना–दूनू फीचर के अनिवार्य अंग बा । ना तऽ मनोरंजक प्रस्तुति के बिना कवनो समाचार फीचर कहला सकत बा, ना सूचनात्मक आग्रह के बिना कवनो आलेख फीचर के संज्ञा पा सकत बा ।

'फीचर' शब्द के अर्थ होला नाक-नक्शा भा चेहरा । जब कवनो लेखक कवनो सूचना भा समाचार के अइसन सजीव आऊर रोचक ढंग से प्रस्तुत करे कि ओकर चेहरा पूरा तरह से उभर आवे, तऽ अइसन आलेख के 'फीचर' कहल जाला । एकरा में कथा-शैली, पात्र-योजना, मार्मिकता आ शैली के रोचकता के बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान आउर भूमिका होले। फीचर-लेखन में कलात्मकता, उत्सुकता जगावे के क्षमता आऊर आकर्षण के गुण रहल जरूरी होला । फीचर के अंत में भविष्य के संभावना आऊर फीचर-लेखक के निजी मत भी महत्त्वपूर्ण मानल जाला ।

आदर्श फीचर के नमूना

शीर्षक–लड़िकाई पर बस्ता के बढ़त बोझ

उमिर–5 बरिस । पढ़े खातिर विषय छव गो आऊर किताब दस गो । लिखे खातिर कॉपी बीस गो । बेचारा बच्चा के रीढ़ के हड्डी सीधा नइखे हो पावत–एह बोझ के ढोवला से। आज के शिक्षा के ई कमाल बा । किताबे-कॉपी में अझुरा के रह गइल बा, स्कूल में हाले पहुँचल बा ई लइका। मनोरंजन आ खेल के कवनो जगह नइखे रह गइल। एह लइका के जिनिगी अभिये से तनाव में पड़ गइल बा । स्कूल में मास्टर साहब लोग बा जे खाली सिलेबस पूरा करावे खातिर रोज एक-एक चैप्टर कइसहूँ पढ़ावत जा रहल बा आ घरे पहुँचला पर ट्यिूशन वाला मास्टर साहब आ जात बाड़े । रात में ग्यारह बजे ले जाग के स्कूल के टास्क पूरा करत बा लइका । एको मिनट के संवास नइखे । ई सोंच के कि आगे अभी अठारह–बीस बरिस से एहू से कठिन तपस्या जब ऊ करी तब जाके डॉक्टर, इंजीनियर भा साहेब कुछऊ बन सकी--अभिये से ऊ लइका के माथा पगला रहल बा ।

ज्ञान के दुनिया अपार बा । रोज एकहे गो नया चीज एमें समा रहल बा । गणित, विज्ञान, सामाजिक शिक्षा–अब एतने विषय तक ई दुनिया नइखे रह गइल । कंप्यूटर सब पढ़ाई खातिर जरूरी जरिया बन गइल बा । ई कंप्यूटर आँख चऊपट करके बचवा के आँख पर चश्मा बचपने में चढ़ा देत बा । बाहरी दुनिया के देखेवाली आँख के रोशनी कमजोर पड़ला के बाद भीतरी आँख के रोशनी खुलले कँनू परोसा कइल जा सकत बा । आ एकरो का विश्वास । समाज में एक दूसरा के बीच पल रहल अविश्वास नफरत, टाँग खींचऊअल में का उमेद कइल जाव ?

साँच पूछल जाव तऽ बचवन के ज्ञान दिहल कवनो बुरा बात नइखे बाकिर खाली किताबिये ज्ञान से का होखे के बा ? जरूरत बा अइसन नयकी शिक्षा-प्रणाली के विकास के–जवना से मानस के साथे-साथ मन भी ऊँचा भाव से भर सके । विज्ञान, प्रयोग के भाव जगावे, खोज के ललक पैदा करे । कला आंतरिक आ बाह्य गुणन के विकास करे । वाणिज्य मेलजोल ना समतो के भाव भरे में सफल होखे । सुयोग्य शिक्षक, उत्तम शिक्षा प्रणाली, कुशल दूरदर्शी नेतृत्व, दृढ़ इच्छाशक्ति–ई सब के जब सम्मिकांचत संयोग होई तब ई बस्ता बोझ ना रह जाई बचपन पर । बचपन के मुस्काये खातिर बस्ता के बोझ हटल बड़ा जरूरी बा।

पटकथा

'पटकथा' के शाब्दिक अर्थ होई पर्दा खातिर कथा । संक्षेप में जब कवनो कहानी के फिल्म आ टी. वी. धारावाहिक के रूप में देखावे खातिर कैमरा के नजरिया से लिखल जाय त ऊ 'पटकथा' कहाला । हालांकि पटकथा पहिला बेर त पटकथा-लेखक लिखऽले बाकी ओके आउर प्रभावकारी बनाव खातिर कैमरा मैन (फोटोग्राफर) अपना ढंग से फोटोग्राफी करत जइसे दोबारा लिखेले । फेर निदेशक जेकरा दिमाग में पूरा कहानी के फिल्मी रूप में उकेरे के रूपरेखा मौजूद रहेला, कैमरा मैन, लाइट मैन आ अभिनेता-अभिनेत्री के निर्देशन देत तिबारा लिखेला आ आखिर में फिल्म के शूटिंग पूरा भइला पर एडिटिंग करे के दौरान आगे-पीछे जोड़-घटाव के चौथा बार एडिटर लिखेले ।

दरअसल 'पटकथा' लइकन खातिर छपेवाला कौमिक लेखा, कहानी के खंड-खंड में दर्शक के आगे आकर्षक ढंग से परोसे के एगो विशेष लेखनह, जवना नींव पर फिल्म आ धारावाहिक के घर तइयार होले । साफ बा कि इमारत बढ़िया बनी कि घटिया, एकर दारोमदार पटकथे पर निर्भर करेले ।

पटकथा लेखक में ई गुण होखे के चाहीं कि ऊ कैमरा के आँख से पर्दा पर घटेवाली घटनन के कल्पना, लेखन करत खानी करत जाय । एह प्रकिया में अंग्रेजी में 'विश्वजाइलेशन' कहल जाला ।

पटकथा-लेखन के कवनो निर्धारित तरीका नइखे । अपना-अपना सुविधा आ हुनर से एके अलग-अलग तरीका से लिखे आ फिल्म बनावे के उदाहरण भारतीय फिल्म-जगत में मिलेला । उदाहरण खातिर, सुप्रसिद्ध फिल्मकार सत्यजित राय चूँकि खुदे चित्रकार रहस, एह से चित्रे के माध्यम से ऊ कवनो फिल्म के पूरा पटकथा तइयार कर लेत रहस फेर ओही के आधार पर अपना फिल्मन के शूटिंग कर लेत रहस । एगो दोसर बंगाली निदेशक मृणाल सेन कैमरा मैन के कहके बहुत सारा फोटोग्राफी करा लेत रहस जवना के बाद में जोर घटा के एगो पटकथा बना लेत रहस, काहें कि उनका दिमाग में कहानी के रूपरेखा बिना कवनो लिखा-पढ़ी के रहत रहे ।

आखिर में मोटा-मोटी पटकथा-लेखन के जवन तरीका बा, ऊ नीचे के उदाहरण से समझल जा सकेला ।

प्रसिद्ध हिन्दी फिल्म 'मदर इंडिया' के कथासार कुछ एह तरह से बा कि एगो किसान-परिवार के पास सीमित जमीन रहे । शादी के बाद किसान के हाथ टूटत पहाड़ के टुकड़न के नीचे दब के बेकार हो जाता । ऊ काट देल जाता । अपना मजबूरी से घबड़ा के ऊ एक दिन

घर छोड़के लापता हो जात बा । तब ओकर मेहर जवन अभाव में बैल ना खरीद सकता रहे, अपना दूगो बेटन के बैल के जगहा जोत के खेती आ जीवन के गाड़ी आगे बढ़ावतिया । तबहूँ गाँव के लाला के कर्जा आ जुलुम ओकरा पर बढ़ल जाता । आखिर में नायिका के छोट बेटा डकइत बन के एक दिन ना खाली लाला के चुनौती देता बलुक ओकरा जवान बेटी के जबरदस्ती घोड़ा पर बइठा के ले भागे चाहता। गाँववाला माई से बिनवता । मतारी बेटा के मना करत बिया आ जब ऊ नइखे मानत त अपने बनूक उठाके अपना बेटा के मार दे तिया काहें कि ओकरा सामने गाँव के इज्जत के सवाल बेटो से बढ़ के बा ।

अब एह कहानी के पटकथा कुछ एह ढंग से शुरू भइल बा–

क्रम	दृश्य	संवाद
1.	गाँव में सरकारी नहर बनके तइयार बा । ओकरा उद्घाटन खातिर एगो । झिरकुट बुढ़िया भारत माता नियर खड़ा बाड़ी । ऊ अपना हाथ से नहर के फाटक खोल दे ताड़ी । पानी इहाँ के गिरे लागता ।	×
2.	उनका अपन बीतल दिन इयाद आवे लागता । लागता कि नहर में पानी ना उनका अपन हाथ से मारल बेटा के खून बहता । (एह घरी पानी के रंग पर्दा पर दर्शक के कबो लाल लउकता, कबो असल रंग में)	×
3.	दर्शक अबले समझ जाता कि ई बुढ़िया फिल्म के नायिका हिय । अब कहानी पीछे लवट के (फ्लैश बैक) में नायिका के शादी आ बिदाई के दृश्य में बदल जाता ।	गाना 'पी के घर आज प्यारी दुलनिया चली.........

अइसहीं बाकी कहानियो के पटकथा का रूप में लिखल जा सकेला ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. पटकथा के का शाब्दिक अर्थ होला ?
2. पटकथा के-के लिखेला आ कवना दृष्टि से ?
3. पटकथा आ कौमिक के कथा में का समानता बा ?
4. सत्यजित राय के पटकथा के का तरीका बा ?
5. मृणाल सेन कइसे पटकथा के कल्पना करेलन ?

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. पटकथा के परिभाषा लिखीं।
2. पटकथा-लेखन के उदाहरण देके समझाईं।
3. पटकथा-लेखन में कवन गुण होखे के चाहीं।
4. पटकथा-लेखन में कवना-कवना बात पर ध्यान देवे के चाहीं।
5. पटकथा कवना-कवना माध्यम खातिर लिखल जाला।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. पटकथा आ साधरण कथा के अंतर बताईं।
2. पटकथा लिखे के विभिन्न फिल्मकारन के उदाहरण देके समझाईं।
3. पटकथा के कवनो उदाहरण पेश करीं।
4. फिल्म 'मदर इंडिया' के पटकथा कइसे लिखल गइल बा ?
5. कैमरा के आँख से लिखे का पीछे का मतलब बा ?

परियोजना कार्य

1. कवनो फिल्म के कहानी गढ़ीं।
2. कवनो धारावाहिक खातिर छोट पटकथा लिखीं।
3. कवनो भोजपुरी फिल्म के कथा पटकथा शैली में लिखीं।

शब्द-भंडार

पटकथा	पर्दा पर चलेवाली कहानी खातिर कथा
धारावाहिक	जवन कहानी टी०वी० पर क्रमशः खण्ड-खण्ड में देखलावल जाला।
कैमरामैन	कैमरा से फोटो खींचेवाला फोटोग्राफर
निदेशक	जेकरा देखरेख में काम होला।
लाइट्मैन	फोटोग्राफी करत खानी प्रकाश-व्यवस्था करेवाला शिल्पी
शूटिंग	फिल्म या धारावाहिक कैमरा से बनावे के प्रक्रिया
एडिटिंग	फिल्मावल के दृश्य आगे-पीछे आ काट के कहानी के मांग-अनुसार पूरा करके काम
दरअसल	असल में
विश्वजाइलेशन	घटनेवाली घटना के कल्पना कइल
मदर इंडिया	भारत की माता
नायिका	कहानी में मुख्य भूमिका निभावेवाली औरत
झिरकुट	बहुत उमरवाला बूढ़
उद्घाटन	कवनो काम के शुरू करा देवे के काम
दर्शक	देखेवाला

ABDIEL SOLUTIONS
ABSOL
★PATNA★

क्रिया

परिभाषा : जवना शब्द से कवनो काम के भइल भा कइल पावल जाला ओकरा के क्रिया कहल जाला । साधारण रूप में क्रिया का अंत में 'ल' प्रत्यय पावल जाला । जइसे–आईल, गईल, गावल, पीयल, खाईल ।

प्रयोग आ रचना का अनुसार क्रिया के दूगो भेद होला–अकर्मक आ सकर्मक ।

अकर्मक क्रिया–जवन क्रिया के व्यापार फल कर्त्ता पर पड़ेला ओकरा अकर्मक क्रिया कहल जाला ।

जइसे– राम हँसत बा ।

सीता छींकत बिया ।

मुनिया रोवत बिया ।

इहँवा, हँसल, छींकल, रोवल क्रमशः 'राम', 'सीता' आ 'मुनिया' कर्त्ता का माध्यम से हो रहल बा एह में कर्म नइखे । एह से इ कुल्हि अकर्मक क्रिया कहलाई ।

सकर्मक क्रिया–जवन क्रिया के व्यापार आ फल कर्त्ता पर ना पड़ि के कर्म पर पड़ेला ओकरा सकर्मक क्रिया कहल जाला ।

जइसे– गौरव किताब पढ़ रहल बा ।

सौम्या आम खा रहल बिया ।

सुरभि खाना बना रहल बिया ।

इहँवा पढ़ल, खाईल, बनावल सकर्मक क्रिया के उदाहरण बा ।

प्रयोग आ रचना के अलावे क्रिया के कुछ आउरो भेद होला–

(1) द्विकर्मक क्रिया–कवनो वाक्य में जब दू गो कर्म ला एके गो क्रिया के प्रयोग होला त ओकरा द्विकर्मक क्रिया कहल जाला ।

जइसे– गुरुजी लइकन के किताब पढ़ावत बाड़न ।

रश्मि बेटा के मिठाई खियावत बिया ।

इहँवा पहिला वाक्य में पढ़ावल क्रिया के संगे लइकन आ किताब दूगो कर्म के प्रयोग आ दूसरका वाक्य में खियावल क्रिया का संगे बेटा आ मिठाई दूगो कर्म के प्रयोग बा ।

(2) संयुक्त क्रिया–जवन क्रिया दू भा दू से अधिका धातु के मेल से बने ओकरा संयुक्त क्रिया कहल जाला ।

जइसे–मुन्ना रोये लागल ।

रोहित घरे पहुँच गइल ।

इहँवा रोये लागल आ घरे पहुँचल संयुक्त क्रिया के उदाहरण बा ।

(3) पूर्वकालिक क्रिया–जब कर्त्ता एक क्रिया समाप्त होते दोसर क्रिया का ओर बढ़े ला त पहिल क्रिया के पूर्वकालिक क्रिया कहल जाला ।

जइसे–अंशु खा के स्कूल गइल ।

बादल नहा के खइलस ।

इहँवा खाइल आ नहाइल पूर्वकालिक क्रिया बा ।

(4) प्रेरणार्थक क्रिया–जब कवनो वाक्य में कर्त्ता अपने काम न कइ के दोसरा से करावेला त ओकरा प्रेरणार्थक क्रिया कहल जाला ।

जइसे– मोहन मजदूर से पेड़ कटवावता ।

मीरा माई से चिट्ठी पढ़वावत बिया ।

इहँवा कहवावल, पढ़वावल प्रेरणार्थक क्रिया बा ।

(5) सहायक क्रिया–जब मुख्य क्रिया के अर्थ स्पष्ट करे भा पूरा करेला कवनो क्रिया के प्रयोग होला त ओकरा सहायक क्रिया कहल जाला ।

जइसे– सभे मेला जात रहे ।

लइका गोली खेलत ह ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

नेताजी भाषण देत रहीं ।

इहवाँ रहे, ह, रहीं सहायक क्रिया बा ।

1. नीचे दिहल वाक्य में कवन क्रिया भेद के उदाहरण बा–

(क) ज्ञानू मनीष के किताब दिहलन । (दिहलन, द्विकर्मक)

(ख) किरण हँसल बिया । (हँसल सकर्मक)

(ग) नंदू रोटी खात बा । (खात, सकर्मक)

(घ) गाड़ी चले लागल । (चले लागल, संयुक्त क्रिया)

(ङ) श्रवण खा के सुत गइल (खा के पूर्वकालिक क्रिया)

(च) राहुल चुन्नू से पेड़ कटवइलस । (कटवावल, प्रेरणार्थक)

2. नीचे दिहल क्रिया पद के प्रेरणार्थक रूप दिहल बा –

(क)	पढ़ल	–	पढ़वावल
(ख)	लिखल	–	लिखवावल
(ग)	काटल	–	कटवावल
(घ)	खाइल	–	खिलवावल
(ङ)	दउड़ल	–	दउड़ावल

3. नीचे लिखल वाक्य के भूतकाल में दिहल बा –

हम जात बानी ।	(हम जात रहीं)
मोहन किताब पढ़ी ।	(मोहन किताब पढ़ले रहे ।)
सीता चित्र बनइलस ।	(सीता चित्र बनवले रही ।)
सोनू खेल रहल बा ।	(सोनू खेलत रहे)
गोलू स्कूल जात बा ।	(गोलू स्कूल जात रहे)

2. विशेषण

जवन शब्द संज्ञा भा सर्वनाम के विशेषता बतावेला ओकरा के विशेषण कहल जाला आ जवन शब्द के विशेषता बतावेला ओकरा विशेष्य कहल जाला ।

जइसे– **लाल** गाय दूध देत बिया ।

पुरान चाउर पंथ पड़ेला ।

इहवाँ लाल आ पुरान, गाय आ चाउर के विशेषता बतावत बा एहसे ई दूनो शब्द विशेषण कहाई ।

विशेषण के चारि गो भेद होला–

1. गुणवाचक–जवन शब्द संज्ञा भाव के नाम गुण, दशा, स्वभाव के बोध करावे ओकरा गुणवाचक विशेषण कहल जाला ।

जइसे– **गोल** पहिया नाचता ता ।

पाकल आम मीठ होला ।

नया घर नीमन लागेला ।

करिया गाय शुभ मानल जाले ।

एजवा गोल, पाकल, नया, करिया गुणवाचक विशेषण बा ।

2. संख्यावाचक–जवन शब्द संज्ञा आ सर्वनाम के संख्या बतावे ओकरा संख्यावाचक विशेषण कहल जाला ।

जइसे– **एगो** लड़िका खेलत रहे ।

चार गो पेड़ आँधी में गिर गइल ।

कुलि लोग घर छोड़ि के भाग गइल ।

इहवाँ एगो, चार, कुल्हि संख्यावाचक विशेषण बा ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

परिमाणवाचक–जवन शब्द कवनो चीज के नाप तौल के बोध करले ओकरा परिणामवाचक कहल जाला ।

जइसे– **बहुत** लोग जात रहे ।

पाँच सेर दूध आइल ।

सब धन डूब गइल ।

इहवाँ बहुत, पाँच सेर, सब परिमाणवाचक विशेषण बा ।

4. प्रविशेषण–जब कवन शब्द विशेषण के विशेषता बतावे त ओकरा प्रविशेषण कहल जाला ।

जइसे– **बहुत** सुंदर

टह-टह लाल

लमहर बहादुर

अनार के दाना **सेनुनिया** लाल रहे

इहवाँ बहुत, टह-टह लमहर, सेनुरिया प्रविशेषण के उदाहरण बा ।

1. नीचे दिहल वाक्यन में विशेषण लिखल बा

(क) फटल-पुरान नोट (फटल-पुरान)

(ख) दुखी लोगन के मदद उपकार (दुखी)

(ग) सेठजी के सगरी पूँजी डूब गइल (सगरी)

(घ) ढेर लड़िकन के देख के कुकुर भाग गइल (ढेर)

(ङ) दस किलो दूध में थई-थई भ गइल । (दस किलो)

(च) आपन कमाई लुटावे में मोह लागेला । (आपन)

2. नीचे दिहल वाक्यन् में विशेष्य कोष्ठक में लिखल बा।

(1) करिया घोड़ा दउड़त रहे (घोड़ा)

(2) पातर नदी में तेज धार होला (नदी, धार)

(3) मोट अक्षर पढ़े में आसान होला (अक्षर)

(4) गरजे बादल बरसे ना । (बादल)

(5) भारत में बड़हन लोकतंत्र बा । (बड़हन)

3. नीचे दिहल शब्दन से विशेषण बना में वाक्य में प्रयोग करीं–

(क) अच्छाई (ख) माटी (ग) पानी (घ) बुढ़ापा (ङ) लड़िका

B. क्रिया विशेषण

विशेषण के अर्थ में जवन शब्द विशेषता प्रकट करेला ऊ क्रिया विशेष कहाला ।

लड़िका **तेज** दउड़ता ।

मोहन अबहीं आइल रहे ।

इहवा. तेज आ अबहीं क्रमशः दउड़त आ आइल क्रिया के विशेषता बतावता ।

क्रिया विशेषण के अर्थ का अनुसार चारि गो भेद होला ।

(क). काल वाचक–जवन क्रिया विशेषण समय में बोध करावेला ओकरा कालवाचक क्रिया विशेषण कहल जाला ।

मोहन **बाद** में चलल ।

रानी **पहिले** ही आइल रहे ।

इहवाँ बाद, पहिले समय के बोध करावता ।

(ख) स्थानवाचक–जवन क्रिया विशेषण से स्थान के बोध होला ओकरा स्थानवाचक कहल जाला ।

ऊ जहँवा गइल उहँवे अकाल पड़गइल ।

इहवाँ जहंवाँ, उहंवाँ स्थान के बोध करावेला ।

(ग) परिमाणवाचक–जवन शब्द से क्रिया के परिमाण के बोध होला ओकरा परिमाणवाचक कहल जाला ।

ढेर बोलल जीउ के जंजाल होला ।

खूब हँसल नीमन नइखे ।

इहवाँ ढेर, खूब परिमाण बोध करावता ।

(घ) रीतिवाचक–जवना क्रिया विशेषण से क्रिया के रीति के बोध होला ओकरा के रीतिवाचक कहज जाला ।

जइसे– हम **जरूर** जाइब ।

ऊ साइद देखले रहे ।

हम **इहँवे** रहब ।

हम **सचमुच** जाइब ।

अभ्यास

1. नीचे लिखल वाक्यन में प्रयोग भइल क्रिया विशेषण के कोष्ठक में लिखीं –

(क) नीयरे बइठ जा । ( )

(ख) गवे-गवे चलल जाव । ( )

(ग) रनिया पहिले मजदूरी करत रहे । ( )

(घ) कतहूँ टिल्हा होई त कतहूँ खाई होई । ( )

(ङ) अधिका खाइल मउअत के बोलावल ह । ( )

2. नीचे दिहल गइल क्रिया विशेषणन के नीचे दिहल वाक्यन में उपयुक्त स्थान पर भरीं–

गवे-गवे, ठठाके, बादे में, अधिका, धड़ाधड़, डेगा-डेगी ।

(क) उपेन्द्र .... पढ़े वाला लड़िका बा ।

(ख) प्रमिला .... के हँस दिहली ।

(ग) ओकर .... बोलल ओकरा खातिर काल हो गइल ।

(घ) छोट लड़िका .... चले ला ।

(ङ) सऊँसे घर .... गिर गइल ।

अलंकार

जवना के प्रयोग से काव्य के शोभा बढ़ेला भा काव्य में चमक आ जाला ओकरा अलंकार कहल जाला । अलंकार से काव्य अलंकृत भा आभूषित होला । अलंकार के दूगो मुख्य भेद बा–

1. शब्दालंकार–जहवाँ शब्द संबंधी चमत्कार पावल जाला ओकरा शब्दालंकार कहल जाला ।

शब्दलंकार के मुख्य भेद– अनुप्रास, यमक, श्लेष ।

2. अर्थालंकार–जवन विधान द्वारा काव्य में अर्थ संबंधी चमत्कार चातुर्य, सौंदर्य आवे ओकरा के अर्थालंकार कहल जाला । जहवाँ चमत्कार शब्द पर निर्भर ना कके अर्थ पर निर्भर करे उहवाँ अर्थालंकार होला ।

अर्थालंकार के कुछ भेद– उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण ।

शब्दालंकार के प्रमुख भेद–

अनुप्रास–कवनो वाक्य के शब्दन में एके वर्ण के बार-बार आवल आवृत्ति के अनुप्रास कहल जाला ।

अनुप्रास के पाँच गो भेद होला–

छेकानुप्रास, वृत्यानुप्रास, लाटानुप्रास, श्रुव्यानुप्रास, अन्त्यानुप्रास ।

यमक–भिन्नार्थक भा निरर्थक स्वर व्यंजन समुदाय के आवृति के यमक कहल जाला अर्थात् स्वर साम्य के साथ वर्ण समुदाय के अर्थान्तर के साथ आवृत्ति ।

यमक के दूगो भेद होला–

सभङ्ग–जहवाँ शब्द के तुड़ला पर अर्थान्तर होला ।

अभङ्ग–जहवाँ अनेकार्थकवाची शब्द भा शब्दन के राख के शब्द के बिना तुड़ले अर्थान्तर आवेला ।

श्लेष–श्लिष्ट पदन से अनेक अर्थन के कथन के श्लेष अलंकार कहल जाला । श्लिष्ट के अर्थ होला कवनो शब्द में एक से अधिक अर्थ के चिपकल रहल ।

एकर दू गो भेद होला

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

शब्दात्मक आ अर्थगत ।

जहवाँ श्लिष्ट शब्द के पर्यायवाची शब्द रखला पर अर्थान्तर चमत्कार बा रहे ओकरा शब्दात्मक श्लेष कहल जाला ।

जहवाँ श्लिष्ट शब्द के दूसर पर्यायवाची शब्द रखले पर अर्थ चमत्कार बनल रहे ओकरा अर्थगत श्लेष कहल जाला ।

अर्थालंकार के प्रमुख भेद

उपमा–दू वस्तुअन में समान धर्म के प्रतिपादन भा एक वस्तु के दूसर वस्तु से तुलना कइल जाय त एकरा उपमा अलंकार कहल जाला । उपमा के चार अंग होला–उपमेय, उपमान, साधारण धर्म आ वाचक ।

उपमा अलंकार के तीन भेद होते हैं–पूर्णोपमा, लुप्तोपमा, मालोपमा।

पूर्णोपमा–जहवाँ उपमा के चारो अंग उपस्थित रहेला ओकरा पूर्णोपमा कहल जाला ।

लुप्तोपमा–जहवाँ उपमा के कवनो एगो अंग के कमी रहेला ओकरा लुप्तोपमा कहल जाला ।

मालोप्मा–जहवाँ कवनो उपमेय खातिर एक से अधिका उपमान लिहल जाला उहाँ उपमान के माला जइसन हो जाला । एह से एकरा मालोप्मा कहल जाला ।

रूपक–जहवाँ उपमान के सगरी रूप उपमेय में चित्रित होला बाकिर सादृश्य के भाव ना होला । एकरूपता के साथ अभेद के भाव रहेला ओकरा रूपक अलंकार कहल जाला । एकरा कहल सकेला कि जहवाँ उपमेय के उपमान के रूप में दिखावल जाय त ओकरा रूपक कहल जाई ।

रूपक के तीनि गो भेद होला–

निरंग, सांग आ परंपरित ।

निरंग–जहवाँ उपमान के आरोप बिना ओकरा अंगन के उल्लेख कइले उपमेय पर होखे ।

सांग–जहवाँ उपमेय में उपमान के अंगन के भी आरोप होखे ।

परंपरित–जहवाँ एगो रूपक द्वारा दूसर रूपक के पुष्टि कइल जाला ।

उत्प्रेक्षा–जहवाँ उपमेय में उपमान के संभावना पावल जाला भा अप्रस्तुत के रूप में प्रस्तुत के कल्पना कइल जाला ।

उत्प्रेक्षा के तीनू गो भेद होला–वस्तुत्प्रेक्षा, हेतुत्प्रेक्षा, फलोत्प्रेक्षा ।

वस्तुत्प्रेक्षा–जहवाँ एक वस्तु में दूसर वस्तु के आरोप के संभावना होखे भा जहवाँ प्रस्तुत–अप्रस्तुत वस्तु के कल्पना होखे त ओकरा उत्प्रेक्षा अलंकार कहल जाला । एकरा कहल जा सकेला कि उपमेय में कल्पित उपमान के संभावना उत्प्रेक्षा ह ।

मानवीकरण–जहवाँ कवनो जड़-चेतन वस्तु के मनुष्य के रूप में मान के भा कल्पना के वर्णन कइल जाला त ओकरा के मानवीकरण अलंकार कहल जाला ।

MODEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

मुहावरा आ लोकोक्ति

भाषा के रोचक आ प्रभावपूर्ण बनावे में मुहावरा आ लोकोक्ति के महत्त्वपूर्ण स्थान होला। मुहावरा आ लोकोक्ति के प्रयोग से भाषा सरस आ सशक्त हो जाला आउर भावाभिव्यक्ति में चमत्कार आ जाला ।

मुहावरा

'मुहावरा' शब्द के अर्थ होला–अभ्यास, बातचीत, जब कवनो वाक्यांश भा शब्द-समूह अपना मूल शाब्दिक अर्थ के छोड़ के कवनो दोसर विशेष अर्थ प्रकट करे, तब ऊ वाक्यांश भा शब्द-समूह मुहावरा हो जाला । मुहावरा के स्वतंत्र रूप से प्रयोग नइखे हो सकत ओकर प्रयोग वाक्य के अंग के रूप में कइल जाला । उदाहरण–'पेट काटल' । 'पट काटल' से कवनो सीधा अर्थ प्रकट नइखे होत । बाकिर जब कहल जाई कि 'हम पेट काटके अपना लइका के पढ़वनि ह', त एकरा वाक्य में स्पष्टता आजाता । मुहावरा में मूल 'क्रिया-पद' के होखल जरूरी बा, जेकरा अंत 'ल' लागल होखे । उदाहरण–

दूनूँ हाथ से पइसा पीटल ।

मोछ पर ताव दिहल ।

चानी काटल ।

झख मारल ।

लोकोक्ति

'लोकोक्ति' शब्द 'लोक' आ 'उक्ति' से बनल बा । लोकोक्ति सामाजिक जीवन के अनुभव के आधार पर बनेला । लोकोक्ति मुहावरा जइसन वाक्य के अंग ना होला । प्राय: लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होले । एकर प्रयोग उपदेश देवे खातिर आ अपना कथन के पुष्टि खातिर प्रभावकारी सिद्ध होला । लोकोक्ति के 'कहावतो' कहल जाला । लोकोक्ति भा कहावत के प्रयोग विशेष संदर्भ में होला आ ओकर विशेष अर्थ लिहल जाला । उदाहरण–

आम के आम गुठली के दाम ।

आंहर कुकुर बतासे भूके ।

गेहूँ के साथ घूनो पिसाला ।

अंहरा में काना राजा ।

भईस के आगे बीन बजावस, भईस करे पगुरी ।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **कइसन पत्र के चिट्ठी कहल जाला ?**

   (क) पारिवारिक (ख) सरकारी (ग) व्यावहारिक (घ) एह में कवनो ना

2. **कार्यालयी आवेदन पत्र कवना प्रकार के पत्र होला ?**

   (क) औपचारिक (ख) अनौपचारिक (ग) दूनों (घ) एहमें से कवनो ना

3. **गद्य के कसौटी होला–**

   (क) कहानी (ख) नाटक (ग) निबंध (घ) कवनो ना

4. **'फीचर' कवना तरह के समाचार के कहल जाला ?**

   (क) सरकारी समाचार के (ख) मनोरंजक समाचार के

   (ग) आपराधिक घटना से जुड़ल समाचार के (घ) एहमें से कवनो ना

5. **भाववाचक विशेषण के उदाहरण कवन बा–**

   (क) अच्छा (ख) चार (ग) मीटर आम

6. **जवना शब्द से कवनो काम के कइला या भइले के बोध होला, ऊ कहाला–**

   (क) संज्ञा (ख) क्रिया (ग) विशेषण सर्वनाम

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. चिट्ठी में कवन-कवन बात के महत्त्वपूर्ण स्थान होला ? ई बात तीन पंक्ति में लिखीं ।
2. कार्यालयी आवेदन पत्र में कवना बात के संभावना रहेला ?
3. निबंध के तीनू भेद के नाम लिखीं ।
4. निबंध के चारो अंग के नाम लिखीं ।
5. पटकथा के शाब्दिक अर्थ का होला ?

6. 'फीचर' शब्द के अर्थ का होला ?

7. विशेषण आ क्रिया विशेषण के परिभाषा लिखीं ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. अपना छोट भाई के कुसंगति से बचावे खातिर एगो पत्र लिखीं ।

2. अपना साइकिल चोरी के रिपोर्ट करे खातिर थाना प्रभारी के पत्र लिखीं ।

3. 'प्रदूषण के समस्या' पर एगो संक्षिप्त निबंध लिखीं ।

4. 'पटकथा-लेखन' का होला–आपन शब्दन में लिखीं ।

5. 'बाल-मजदूरी' पर एगो फीचर लिखीं ।

6. क्रिया आ ओकर भेद के परिभाषा लिखीं ।

7. नीचे दिहल पंक्तिअन में कवन अलंकार बा बताईं–

(क) जे रहे अति सुन्दर राम शिला
बन के बन पत्थर आज गइल ।

(ख) भजन कह्यो ताते भज्यो भज्यो न एको बार ।
दूर भजन जाते कह्यो ते ही तू भज्यो गँवार ।

8. नीचे लिखल वाक्यन में से गुणवाचक आ परिमाणवाचक विशेषण खोज के लिखीं–

(क) हमार घर पुरान बा ।

(ख) सूरज गोल बा ।

(ग) हमरा एक मीटर कपड़ा चाहीं ।

(घ) ऊ लइका गरीब बा ।

(ङ) कक्षा में बहुते विद्यार्थी बाड़े ।

9. नीचे दिहल कहावतन के अर्थ लिखीं–

(क) अंहरा पीसे कुत्ता खाये ।

(ख) जौ के साथ घुन पिसाईल ।

(ग) आम के आम गुठली के दाम ।

(घ) अंहरन में काना राजा ।

(ड) अंत भला तऽ सब भला ।

परियोजना कार्य

1. 'आज के तनावपूर्ण शैली' पर एगो फीचर लिखके अपना कक्षा में पढ़ के सुनाईं ।
2. अपना माता, पिता, शिक्षक आदि से पूछ के तथा अपना पाठ्य पुस्तक से खोज के मुहावरा आ लोकोक्ति के सूची तैयार करीं आ अपना शिक्षक के देखाईं ।
3. 'केतना बदलल हमार गाँव' विषय पर नीचे दिहल संकेत विन्दुअन के आधार पर एगो निबंध लिखीं–

   (क) भूमिका (ख) गाँवन के देश भारत (ग) आजादी के बाद बदलत दशा (घ) पुरान ग्रामीण व्यवस्था (ड) वर्तमान दशा (च) उपसंहार ।

ABDUL SOLUTIONS ABSOL PATNA